धार्मिक अनुष्ठान ''परैशराच'' में छहाड़ी गायन का महत्त्व

BINNI CHAND
Research Scholar, Department of Music, Himachal Pradesh University, Summerhill, Shimla

सार संक्षेपिका

'गीत, वाद्य और नृत्य' इन तीनों कलाओं को संगीत की संज्ञा दी गई है। ये तीनों कलाएं स्वतंत्र होते हुए भी परस्पर एक–दूसरे के पूरक समझी जाती है। संगीत मनुष्य के मनोगत भावों को उजागर करने का एक सशक्त माध्यम माना जाता है। संगीत वह आकर्शण तथा मधुरता है जो प्रत्येक परिस्थिति में आनन्दविभोर करने की क्षमता रखता है। हिमाचल प्रदेश के ज़िला शिमला के अन्तर्गत रामपुर बुहशर क्षेत्र पड़ता है जो कि अपनी सांस्कृतिक परम्परा के लिए प्रदेश भर में जाना जाता है। यहां वर्ष भर में अनेकों मेलें, त्योहार एवं धार्मिक अनुष्ठान मनायें जाते है। ये मेले, त्योहर व अनुष्ठान किसी भी क्षेत्र, प्रदेश या देश की संस्कृति के परिचायक होते हैं। इन सभी में से एक धार्मिक अनुष्ठान है 'परैशराच'। जो कि रामपुर बुशहर के लगभग हर गांव में किया जाता है। यह भगवान विष्णु का जागरण है। यह जागरण छहाड़ी गायन शैली पर आधारित है। इस जागरण में छहाड़ी गायन का बहुत ही महत्त्व है। छहाड़ी गायन के बिना यह जागरण पूर्ण हो पाना सम्भव नहीं है। क्योंकि जो भी विधि–विधान या कार्यवाही इस जागरण में की जाती है उनकी एक विशिष्ट छहाड़ी अथवा गीत है। इसलिए छहाड़ी गायन की इस जागरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

इस शोध पत्र की सामग्री का संग्रहण करने के लिए सर्वेक्षणात्मक विधि का प्रयोग किया गया। लिखित में पुस्तकालय से विभन्न पुस्ताकों के अध्ययन से और विभिन्न गांवों के जानकार लोगों से साक्षात्कार द्वारा इस शोध पत्र की समग्री को एकत्रित किया गया है।

बीज शब्द

परैशराच, छहाड़ी गायन

भूमिका

सहित्य, संगीत और कला तीन ऐसे प्रमुख क्षेत्र है जो मानव के व्यक्तित्व को महानता प्रदान करते है। इन तीनों क्षेत्रों का अपना–अपना स्थान व महत्व है। लेकिन जब हम संगीत के क्षेत्र की बात करते है तो संगीत में कलाकार स्वर, लय, ताल तथा काव्य की सहयता से अपने मनोगत भावों को व्यक्त करता है। मन के भावों को प्रकट करने के लिए संगीत कला को सबसे अच्छा साधन माना जाता है। हम जब किसी भी प्रकार का संगीत सुनते है तो हमें एक असीम शान्ति तथा सुकून की प्राप्ति होती है। फिर चाहे वो किसी भी परिस्थिति में सुना जाए। संगीत वो कला है जो प्राणी मात्र के साथ–साथ प्रत्येक जड़ और चेतन को तत्काल ही प्रभावित कर लेता है और स्वार्थ का परित्याग करके परमार्थ की ओर आकर्षित करता है।

हिमाचल प्रदेश के अन्तर्गत ज़िला शिमला का सम्पूर्ण क्षेत्र सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अपना एक अलग ही अस्तित्व रखता है। हिमाचल प्रदेश का शिमला ज़िला अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं रमणीक स्थल है। यहां की सामाजिक व लोक सांगीतिक परम्पराएं बहुत ही समृद्ध है जो कि किसी समुदाय व समाज या किसी क्षेत्र विशेष की पहचान होती हैं तथा मनुष्य द्वारा इन परम्पराओं का निर्वहन जन्म से लेकर मृत्यु तक किया जाता है। मनुष्य को इन परम्पराओं का निर्वहन करना

आवश्यक होता है क्योंकि ये मनुष्य के लिए सामाजिक बन्धन होती हैं। जिसके द्वारा समाज में शान्ति व्यवस्था कायम रहती है।

शिमला ज़िला के अन्तर्गत 12 तहसीलें आती है। जिसमें से रामपुर बुशहर भी एक तहसील है जो हिमालय के भीतरी क्षेत्रों की गोद में बसा एक सुन्दर मन मोहक पर्यटन स्थल है। सतलुज नदी के दोनों ओर फैली बुशहर घाटी हिमालय की खूबसूरत घाटियों में से एक है जो न केवल सेब के बागों, नागर व पहाड़ी शैली में बने मन्दिरों के लिए ही प्रसिद्ध है बल्कि लोक संगीत एवं लोक नृत्य के लिए भी जाना जाता है।

किसी भी देश या प्रदेश की संस्कृति के परिचायक इन मेलों, त्योहारों और धार्मिक अनुष्ठानों को ही माना जाता है। इन्हें न केवल एक आन्नद प्राप्ति का साधन माना जाता है बल्कि ये हमारी समृद्ध संस्कृति के परिचायक होते हैं। समय में बदलाव होने के साथ–साथ इनके आयोजनों में भी परिवर्तन आना सम्भव है लेकिन फिर भी यहां के लोगों ने इनकी मौलिकता को बनाए रखने में अपनी बहुत बड़ी भूमिका अदा की है। वर्ष भर में मनाये जाने वाले मेले, त्योहार व धार्मिक अनुष्ठान इस क्षेत्र की अमूल्य नीधि है। यहां पर मनाए जाने वाले उपरोक्त सभी में से एक धार्मिक अनुष्ठान है 'परैशराच' जो भगवान विष्णु की स्तुति में मानाया जाता है।

परैशराच (विष्णु भगवान का जागरण)

यह अनुष्ठान रामपुर बुशहर का एक मुख्य अनुष्ठान है जिसका प्रयोजन भगवान विष्णु के नाम पर किया जाता है। यहां के लोगों द्वारा हर तीन या पांच साल के बाद इस जागरण का आयोजन किया जाता है जिसे परैशराच कहा जाता है। किवदन्तीयों के अनुसार इसका नाम 'परैशराच' इसलिए पड़ा क्योंकि इस दिन यह कार्य पूरी रात चलता है। 'परैश' अर्थात् उजाला और 'राच' अर्थात् रात। तो इसका अर्थ हुआ रात से उजाले की ओर। यानि रात से लेकर भगवान विष्णु का कार्य सुबह होने तक चलता रहता है। यह कार्य कुल पुरोहित के द्वारा किया जाता है जो जोशी खानदान से तालुक रखता हो और जो यह कार्य करना जानता हो। इस जागरण के लिए जजमान द्वारा अपने सभी सगे–सम्बन्धियों, रिश्ते–नातों को निमन्त्रण दिया जाता है। इस जागरण में निम्नलिखित विधियां एवं कार्यवाही की जाती हैं:–

1) पाची सर्बोज़ण (फूल–पत्तियों की पूजा)

इस जागरण की शुरूआत बारह माली से होती है जिसके घर में यह देवता होता है उन्हें इस अनुष्ठान में आने का निमन्त्रण दिया जाता है और उन्हीं लोगों को बारह माली कहा जाता है। वह कुछ फूल–पत्तियों को अपने साथ लाकर इस जग (जागरण) में शामिल होने के लिए आते हैं। तो सबसे पहले जोशी द्वारा बारह माली और उनके द्वारा लाई गई 'पाची' (फूल–पत्ती) की बाहर खलियान में पूजा

की जाती है। उसके बाद पूजा करके उन्हें घर के अन्दर ले जाया जाता है और एक कोने में रख दिया जाता है। इस दौरान 'छहाड़ी गायक' भी छहाड़ी गायन करते रहते है। जैसा पूजन जोशी द्वारा किया जाता है वैसा ही ये गायक गायन करते रहते है। यह इस जागरण की खास बात है कि जो भी जोशी द्वारा कार्य किया जाता है वही गायक भी अपने गायन में गाते रहते है जो सिलसिला पूरी रात भर चलता रहता है।

2) शेरशा व नजेरू देवता का आवाहन

इसके पश्चात् शेरशा नामक छहाड़ी का गायन जाता है। गायक इसे अपने गायन में प्रस्तुत क और जोशी अपने मंत्रों से इस प्रक्रिया को करत इसमें यह कहा जाता है कि धरती पर सरसों नहीं है जो कि इस जागरण के लिए आवश्यक होता है तो उस सरसों को ढूंढने का गुणगान इस छहाड़ में अर्थात् इस दौरान किया जाता है। उस सरसों को ढूंढने के लिए विष्णु का सहयोगी देव 'नजेरू' नारायण को भेजा जाता है। इसी दौरान ही 'नजेरू' का 'गूर' भी बीच में बिठाया जाता है और उसे खेल आ जाती है। गायन खत्म होने के पश्चात् उससे अच्छी–माढ़ी राय पूछी जाती है तत्पश्चात् वह शान्त हो जाता है।

3) बेर बिठाना व नवग्रह की स्थापना

इसके पश्चात् जोशी द्वारा एक कोने में रंगोली बनाकर उसके ऊपर बेर (10 से 15 किलो गेंहू के दानों को एक कोने में ढेर लगाना) बिठाई जाती है। इस दौरान 'शागण' नामक छहाड़ का गायन किया जाता है। इसके बाद जोशी द्वारा नव ग्रह की स्थापना एक दीवार पर गाय के गोबर की सहयता से की जाती है यह कार्य भी गायन के साथ किया जाता है। इस जागरण में छहाड़ी गायन का बहुत ही महत्त्पूर्ण स्थान है जो भी कार्य होता है वह गायन के साथ ही पूर्ण होता है। नव ग्रह के पश्चात् जोशी के द्वारा बोसू धारा (घी, दूध और गंत्र की धारा) को दीवार पर गिराया जाता है और उनकी पूजा की जाती है।

4) देवता आगमन

इसके पश्चात् देवता आगमन की प्रक्रिया पूर्ण की जाती है। इस कार्य के लिए परिवार में से एक व्यक्ति को चूना जाता है जो देवते को मंदिर से निकालकर जागरण में लेके आता है। इस दौरान देवता आगमन का गीत (छहाड़) का गायन किया जाता

है। फिर देवते को नहा–दुल्हा कर उसे फूल–पत्तियों व कपड़े की बनी छोटी–छोटी कलियों से सजाया जाता है और जग में बिठाया जाता है।

5) बोसता आगमन

इसके बाद जागरण में बोसता (मिट्टी धरती मां) का आगमन होता है। जोशी द्वारा यह कार्य किया जाता है और गायक द्वारा गायन के माध्यम बोसता की स्तुति की जाती है। इस दौरान परिवार के हर घर के लोग अपने–अपने खेतों से मिट्टी ले जाते है और वहां चढ़ाते है। जिससे भविष्य मे उनके खेतों की उपज में बढ़ावा हो इसलिए ये मिट्टी चढ़ाई जाती है।

6) देवता पूजन व व्रत समाप्ति

इन सभी के बाद अब देवता का पूजन किया जाता है। सबसे पहले जिसके घर में जागरण होता है वह पूजा करता है उसके बाद बाहर माली और बाद में सभी लोग जिसका व्रत होता है तथा अन्य लोग सभी देवता का पूजन करते है। पूजन करते हुए भी पूजा के गीत (छहाड़) का गायन किया जाता है। जो भी पूजा करने जाता है उसका सम्बन्ध घर के मूखिया से जोड़कर गायन किया जाता है। फिर सभी लोगों को खाना खिलाया जाता है लेकिन जोशी और बारह माली व घर के मुखिया द्वारा खाना नहीं खाया जाता है केवल दूध या उबाले हुए आलू का सेवन कर सकते है।

7) सुबह की कोठी

अब सुबह का कार्य शुरू हो जाता है अब तक लगभग रात के एक या दो बजे का समय हो जाता है। इस कार्य में सबसे पहले विष्णु भगवान के लिए कोठी (मंदिर) बनाई जाती है। छहाड़ी गायक गायन के माध्यम से मंदिर बनाने की हर एक चीज़ को बताते है और जोशी उसे तैयार करता है। कोठी (मंदिर) को बनाने के लिए सबसे पहले जोशी द्वारा वर्गाकार में आटे तथा कूंगू से रंगोली बनाई जाती है फिर उसे इर्द–गिर्द 40 से 50 किलो अनाज बिछाया जाता है जिसमें हर किसम का अनाज होता है जैसे– फाफरा, जौ, गेंहू, धान, कोदा, मक्की और कावणी आदि। इन सब को रंगोली के चारों ओर वर्गाकार में डाला जाता है तथाइस प्रकार कोठी तैयार की जाती है।

8) सोलह सरगोपी का आवाहन

इसके बाद सोलह सरगोपी का आगमन होता है जिन्हें (कोठी) मंदिर के अन्दर मिट्टी के दियों के रूप में वर्गाकार में ही रखा जाता है। इस दौरान 'सिंगट' नामक गीत (छहाड़) का गायन किया जाता है। इसमें कहा जाता है कि कौन सी मिट्टी इन दियों को बनाने के लिए उपयोगी है। इन दियों की संख्या 16 होती है। इन्हें ही सोलह सरगोपी कहा जाता है और इनके साथ गंगा किनारे पर से छोटी–छोटी पत्थर की गट्टियां भी रखी जाती है। फिर इन दियों में तेल ढालकर सफेद कंद की बत्तियां डालकर इन्हें जलाया जाता है और तत्पश्चात् देवाता को इस कोठी (मंदिर) में लाकर बिठाया जाता है और पूजन किया जाता है।

9) भगवान विष्णु का आवाहन

अब जागरण अपने अन्तिम चरण तक पहुंच जाता है। जोशी द्वारा स्नान किया जाता है और अपने विशेष वस्त्र पहनकर कार्य स्थल में बैठता है। अब गायकों द्वारा एक गीत (छहाड़) गाया जाता है जिसमें भगवान

विष्णु का आवाहन किया जाता है और जैसे ही गीत खत्म होता है वैसे ही जोशी में खेल आ जाती है अथवा स्वयं विष्णु भगवान पंडित में खेल के माध्यम से प्रकट हो जाते है। अब वह समय आ जाता है जब भगवान विष्णु उस जोशी के माध्यम से अपनी व्यथा व सुख–दुख व्यक्त करता है। उसके बाद जो भी घर के सदस्यों व जो भी वहां उपस्थित होते है वो सभी विष्णु भगवान से अच्छे–माड़ी राय अपने सुख–दुःख को पूछते हैं और सभी सुख शान्ति कीकामना करते है। इसके बाद घर का मुखिया, बारह माली और घर के अन्य सदस्य देतवा के साथ नृत्य करते हैं और सभी को को देवता के द्वारा घी की 'चलामत' दी जाती है और वैसे ही शान्त हो जाता है।इसके बाद देवता कोवापिस मंदिर में ले जाया जाता है और जग (जागरण) सम्पूर्ण माना जाता है।

इसके बाद 'मसून्दल़ा' नामक गीत गाया जाता है। 'मसून्दल़ा' यानि धरती मां भगवान विष्णु की बहन थी, वो विष्णु से कहती है कि मुझे भी अपने साथ स्वर्ग लोक ले जाओ मैं यहां नहीं रहना चाहती हूं। लेकिन भगवान विष्णु कहते हैं कि आपको यहीं रहना पड़ेगा। अगर आप भी स्वर्ग लोक आ गए तो यहां लोगों का जीवन कैसे सम्भव होगा। लोग कैसे जीयेंगे, कैसे अपने जीवन का निर्वाह करेगें। तत्पश्चात् नव ग्रह, सोलह सरगोपी, फूल–पत्ती आदि को गंगा के किनारे ले जा कर

पूजा–पाठ करके इनकी स्थापना की जाती है और बोसता अर्थात् जो मिट्टी परिवार के लोगों द्वारा अपने खेतों से लाई जाती है उसे वापिस उन्हीं खेतों में डाली जाती है।

छहाड़ी गायन शैली

'छहाड़ी' गायन शैली बहुत ही प्राचीन एवं पारम्पारिक है। जिसमें देवी–देवताओं की गाथा और स्तुति का वर्णन किया जाता है। इसका प्रचलन वैदिक काल से ही माना जाता है। 'छहाड़ी मुख्य रूप से गाथाओं के गेय रूप का नाम है। 'छहाड़ी' मूल रूप से एक लोक गायन शैली है जो कि युगों–युगों से चली आ रही है जैसे– शिव से संबंधित, विष्णु से संबंधित, रामायण काल, माहाभारत काल, अन्य देवता तथा स्थानीय देवी–देवताओं से संबंधित छहाड़ीयां है जिसे देवी–देवताओं की स्तुति में गाया जाता है और मेलें, त्योहारों, धार्मिक अनुष्ठानों एवं किसी भी कार्यक्रमों में इसे मनोरंजन के लिए भी गाया जाता है।

''छहाड़ी'' शब्द का शाब्दिक अर्थ ''छोड़ने'' से माना जाता है। कहा जाता है कि पुर्वजों की धरोहर जो हमारे पास मौखिक रूप से विद्यमान है, जिसे लोग पीढ़ी–दर–पीढ़ी गाते आ रहें है अर्थात एक पीढ़ी ने छोड़ा तो दूसरी पीढ़ी ने उसे गाना शुरू किया और इस शैली को संजोय रखा। छहाड़ी शब्द लोक भाषा का शब्द है। ऐसा मान जाता है कि 'छहाड़ी' शब्द 'छोड़ना' शब्द का अपभ्रंश रूप है, जिसका सृजन इस धरती पर मानव जाति के निर्माण के साथ ही हुआ माना जाता है। छहाड़ी को लोक भाषा में कई नामों से जाना जाता है जैसेः– छहाड़ी, छैड़ी, और छाअड़ी इत्यादि।

पैरशराच में छहाड़ी गायन का महत्त्व

इस जागरण में छहाड़ी गायन का बहुत ही अधिक महत्त्व है। क्योंकि छहाड़ी गायन के बिना यह सम्बभव ही नहीं है। जैसा कि ऊपर कहा गया है कि जो भी कार्य इस जागरण में किया जा रहा होता है या हो रहा होता है व बिना छहाड़ी के नहीं होता है। जो भी विधि या कार्य जोशी या पंडित के द्वारा किया जा रहा होता है वह सब गायकों द्वारा गायन के माध्यम से भी प्रस्तुत किया जाता है। इस जागरण में जो भी पड़ाव या कार्यवाही होती है उसका एक विशिष्ट गीत अर्थात् छहाड़ है जिसका प्रस्तुतिकरण उस कार्यवाही के साथ–साथ किया जाता है। इसके लिए गायक कलाकारों को बुलाया जाता है जिन्हें 'गैण' कहा जाता है। जो रातभर जागरण में छहाड़ी गायन करते रहते है। इन कलाकारों में एक या दो मुख्य कलाकार होते हैं और दो या दो से अधिक कलाकारों द्वारा मुख्य गायकों का गायन में सहयोग दिया जाता है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि छहाड़ी गायन का इस जागरण में बहुत ही महत्त्वर्पूण स्थान है। इसके

बिना यह जागरण पूर्ण नहीं किया जा सकता है। क्योंकि इसमें छहाड़ी गायन की बहुत ही अधिक महता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

शर्मा देवराज, (1993) हिमाचल प्रदेश (भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं आर्थिक परिचय), जगत प्रकाशन, घुमारवीं, बिलासपुर

शर्मा रूप, (2006) अंधकार से प्रकाश की ओर, करण प्रकाशन, बलद्वाड़ा, मण्डी, हिमाचल प्रदेश

साक्षात्कार

श्री मुन्नी लाल जी, गांव मतैकली डाकघर सुरड तै0 ननखड़ी ज़िला शिमाल हिमाचल प्रदेश दिनांक 16.02.2018

श्री राम चन्द जी, बेलू तहसील ननखड़ी ज़िला शिमला हिमाचल प्रदेश दिनांक 06.03.2018

प्रेम लाल वर्मा जी से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार, दिनांक 20.06.2018